फरीदाबाद
मजदूर समाचार

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

जीवन की लौ को सृजनात्मक तौर पर प्रचुर करने का एक माध्यम

नई सीरीज नम्बर 289 1/– जुलाई 2012

प्रपोज कीजिये–प्रपोजल लाइये–प्रस्ताव रखिये

प्रपोज-प्रपोजल-प्रस्ताव मानी सम्भावनाओं को सोचते-विचारते-छाँटते-चुनते हुये वर्तमान में ला कर उन्हें मूर्तरूप देने के प्रयास करना।

आज यह आम समझ है, सहज समझ है, व्यापक और सामान्य-कॉमन समझ है कि :

1. कोई सुननेवाला नहीं है।

2. सब बिके हुये हैं, सब खाऊ हैं।

3. अपने-अपने हर कोई इतना करती-करता है पर जीवन खिल नहीं पा रहा।

इन परिस्थितियों में कोई माँग करना, डिमाण्ड रखना और विरोधी पक्ष की शक्ति का बखान करना, महिमामण्डन करना क्या मात्र टाइम पास करना तो नहीं है ?

यह जो सहज समझ है, यह जो अनुभवों के निष्कर्ष हैं यह मानेसर, गुड़गाँव, ओखला, फरीदाबाद की विशेषता नहीं है। यही समझ, यही निष्कर्ष ढाका, लाहौर, तेहरान, मैड्रिड, कैरो, काबुल, न्यु यॉर्क, लन्दन, बर्लिन, लागोस, साओ पावलो, मास्को, शंघाई, बीजिंग, टोकयो, हिसार, लुधियाना, कानपुर, कोलकाता, धनबाद, सूरत, चेन्नै, मुम्बई, दुबई, रोम, ब्युनस आयर्स, हाँग काँग आदि-आदि स्थानों पर अलग-अलग भाषाओं में लोगों ने व्यक्त की है, व्यक्त कर रहे हैं।

स्पष्ट है कि शासन के विभिन्न रूप और समाज के जटिल ढाँचे दलदल में धँसते जा रहे हैं। लफ्फाजी और सैन्य बल में दलदल से खींचने की क्षमता नहीं है।

क्या यह दिलचस्प सम्भावनाओं से भरपूर समय नहीं है ? ऐसा समय मानव जीवन में महत्वपूर्ण मोड़ों के दौरान ही आता है। यह **समय है हर एक द्वारा प्रस्ताव रखने का। उत्साह, उल्लास, उत्तेजना, भावावेश, रचनात्मकता, आविष्कारों के कोलाहल की गूँजें उमड़ रही हैं, घुमड़ रही हैं।**

और, आज हमारे बीच के सम्बन्ध इतने गहन, इतने जीवन्त हैं कि दुनिया के किसी कोने की कोई छोटी-सी हलचल भी सम्पूर्ण संसार में सम्भावनाओं-इच्छाओं-आकांक्षाओं को पँख लगा देती है। हाल ही में पेरिस से दो बुजुर्ग मारुति सुजुकी मानेसर के साथियों से मिलने पहुँचे। यहाँ की हलचल ने उनकी 1968 की यादें तो ताजा की ही, उनकी जीवन की खोज को नई ऊर्जा-नई शक्ति दी।

लौटते हैं प्रस्ताव में।

मजदूर समाचार को अपने-अपने प्रस्ताव को बहस में लाने के लिये एक मंच की तरह इस्तेमाल कीजिये। इस मंच को रेलवे प्लेटफार्म की तरह लीजिये : नये विचार आयें, अनेक दिशाओं में, अनेक स्थानों को चले जायें।

प्रस्ताव बोलते समय, लिखते समय कोई बन्धन महसूस मत कीजिये। न तो विषय के महत्व को नापिये और न ही सम्भव-असम्भव, नैतिक-अनैतिक के फेर में पड़िये। गम्भीर और अन्ट-शन्ट के भय से मुक्त हो कर प्रस्ताव रखिये।

– प्रस्ताव में यह भी हो सकता है कि फैक्ट्री के शॉप फ्लोर पर आम का बगीचा और विश्राम के लिये सुन्दर स्थान हो।

– प्रस्ताव में यह भी हो सकता है कि पार्क में बैन्च की ऐसी डिजाइन हो कि बीस लोग आराम से बैठ कर, लेट कर पहेलियाँ गढ सकें।

– प्रस्ताव ऐसे अड्डों के लिये भी हो सकता है जहाँ लड़का-लड़की, स्त्री-पुरुष सहज वातावरण में कल्पना कर सकें, प्रस्ताव बना सकें।

– प्रस्ताव में ऐसे वाहनों की, ऐसी राहों की कल्पना भी हो सकती है जिन से रास्तों पर बच्चे खेलते-कूदते रहें, बड़े-बूढे टहल सकें और यातायात भी जारी रहे।



– प्रस्ताव में यह भी हो सकता है कि अनाज के ऐसे भण्डारण का क्या करें।



– प्रस्ताव में यह भी हो सकता है कि बन्द दरवाजे के बाहर खड़े इस बच्चे को सुनाने के लिये कौनसी कहानी रचें।

फैक्ट्रियों में हालात की एक झलक

●**हरियाणा सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन 1.1.2012 से : *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4847 रुपये (8 घण्टे के 186 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 5497 रुपये (8 घण्टे के 211 रुपये)।* एक पता : श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ । ●1 अप्रैल 2012 से **दिल्ली सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन : अकुशल श्रमिक को मासिक 7020 रुपये (8 घण्टे के 278 रुपये); अर्धकुशल श्रमिक को मासिक 7748 रुपये (8 घण्टे के 298 रुपये); कुशल श्रमिक को मासिक 8528 रुपये (8 घण्टे के 328 रुपये)। एक पताः श्रम आयुक्त, 5 शाम नाथ मार्ग, दिल्ली–110054

एस्कोर्ट्स मजदूर : "फरीदाबाद स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में स्थाई मजदूर दुविधा में हैं। तीन महीने से कम्पनी बार-बार नोटिस लगा रही है कि काम नहीं होने की वजह से फलाँ-फलाँ दिन प्लान्ट बन्द रहेगा लेकिन प्रबन्धक कुछ मजदूरों को बुलायें तो उनको आना पड़ेगा अन्यथा उनकी अनुपस्थिति लग जायेगी। एक स्पेयर पार्ट्स डिविजन को छोड़ कर कम्पनी बाकी सब प्लान्टों में ऐसे नोटिस लगा रही है। और..... और पाँच-दस को छोड़ कर सब स्थाई मजदूरों को प्लान्ट बन्द के दिन प्रबन्धक काम करने बुलाते हैं। फैक्ट्री बन्द वाले दिन ड्युटी आना है की लम्बी सूचियाँ मैनेजमेन्ट लगाती है। नोटिस अनुसार बन्द वाले दिनों वास्तव में नब्बे प्रतिशत से अधिक स्थाई मजदूरों को मैनेजमेन्ट ड्युटी के लिए बुलाती है। नोटिस में उत्पादन बन्द वाले दिनों कैजुअल वरकरों और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की 100% उपस्थिति रहती है। और, एस्कोर्ट्स के हर प्लान्ट में अब पचास प्रतिशत से ज्यादा मजदूर कैजुअल वरकर तथा ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर हैं। नोटिस में उस दिन उत्पादन बन्द जबकि वास्तव में उस रोज सामान्य उत्पादन होता है। माज़रा क्या है ? नन्दा मैनेजमेन्ट को हटा कर एस्कोर्ट्स कम्पनी पर नियन्त्रण के लिये महिन्द्रा मैनेजमेन्ट के प्रयास. .... नन्दा मैनेजमेन्ट द्वारा इन प्रयासों की एक काट के तौर पर इन नोटिसों को हम स्थाई मजदूरों ने देखा था। समधी अमिताभ बच्चन के जरिये रिलायन्स समूह की सहायता प्राप्त कर राजन नन्दा एस्कोर्ट्स का चेयरमैन बने रहने में सफल रहा है। एस्कोर्ट्स में नन्दा मैनेजमेन्ट बनी रही है और यह सब मई में हो गया था। फिर जून में भी ऐसे नोटिसों का राज क्या है? हम ने ट्रैक्टर बनाने वाली अन्य कम्पनियों की जानकारी ली – आयशर ट्रैक्टरों का उत्पादन सामान्य से ज्यादा हो रहा है।"

जयश्री पोलीमर श्रमिक : "प्लॉट 176-77 सैक्टर-3 आई.एम.टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूर एक भी नहीं है – 40 कैजुअल वरकर तथा चार ठेकेदारों के जरिये रखे 450 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **यामाहा, होण्डा, मारुति सुजुकी** के रबड़ के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। रविवार को सुबह 7 से दोपहर बाद 3½ बजे तक ही काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं और 6 महीने से पहले छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं देते – 6 महीने बाद छोड़ने पर भी फण्ड के पैसे बहुत मुश्किल से मिलते हैं। वार्षिक बोनस नहीं देते। मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री में जगह-जगह लैटर बॉक्स लगा रखे हैं, साहब लोग पूछते बहुत हैं पर करते कुछ नहीं। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है। सब मजदूरों ने डिब्बों में कैन्टीन के लिये पत्र डाले – अब जून से मैनेजमेन्ट ने रात की शिफ्ट में चाय के साथ दो रुपये के बिस्कुट देने शुरू किये हैं। कार्यस्थल पर गर्मी और रसायनों की बदबू बहुत हैं।"

प्योगिनम कामगार : "666 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूर एक भी नहीं है, कैजुअल वरकर भी कोई नहीं है, दो ठेकेदारों के जरिये रखे करीब 400 मजदूर काम करते हैं। सुबह 8½ से रात 8½ की ड्युटी है और रात 12 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। गाली देना तो साहबों का पहला काम है, महिला मजदूरों के साथ दुर्व्यवहार भी करते हैं। फैक्ट्री में पी.एफ. का घोटाला ज्यादा है – तनखा से ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर फण्ड के पैसे मजदूरों को मिलते नहीं।"

एस एम एस एक्सपोर्ट वरकर : "डी-28 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में 50 स्थाई मजदूर और दो ठेकेदारों के जरिये रखे 450 मजदूर काम करते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे 450 वरकरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं और हैल्परों को 8 घण्टे के 200 रुपये तथा सिलाई कारीगरों को 225-240-260 रुपये देते हैं।"

सुपर एज मजदूर : "प्लॉट 109 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में मई की तनखा 10 जून तक नहीं दी तो हम ने 12 की जगह 8 घण्टे काम करना शुरू कर दिया। मई की तनखा आज 27 जून तक नहीं दी है और साहब कहता है कि ओवर टाइम करो, तब पैसे देंगे। यहाँ **यामाहा** मोटरसाइकिल के पार्ट बनते हैं।"

ए ए ऑटोटेक श्रमिक : "प्लॉट 190 सैक्टर-5 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में ऑपरेटर, टूल रूम तथा मेन्टेनैन्स के 200 स्थाई मजदूर और चार ठेकेदारों के जरिये रखे 900 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। शनिवार को रात 7 बजे काम आरम्भ करने वालों को रविवार को दोपहर बाद 3 बजे छोड़ते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। दो-तीन महीने में दो-चार दिन का ब्रेक डाउन। ओवर टाइम का भुगतान सब मजदूरों को सिंगल रेट से। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर 6 महीने से पहले नौकरी छोड़ते हैं तो उन्हें फण्ड के पैसे नहीं मिलते। कैन्टीन है और मशीन वाली बहुत पतली रोटी हवा लगते ही सूख जाती हैं, पत्थर जैसी हो जाती हैं। फैक्ट्री में **होण्डा, हीरो, सुजुकी, यामाहा** दुपहियों के अल्युमिनियम के पुर्जे बनते हैं। डाई कास्टिंग का काम है, गर्मी बहुत रहती है।"

लैन्को कामगार : "397 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में **सोडेक्सहो फैसेलिटी**, नोएडा के जरिये हम 80 को रखा था। अचानक पहली मार्च को हम में से 25 को नौकरी से निकाल दिया – बोले की लैन्को कम्पनी स्टाफ कम कर रही है। हमें हिसाब के संग एक महीने का अतिरिक्त वेतन 15 दिन में दे देंगे का आश्वासन दिया था। आज 21 जून तक पैसे नहीं दिये हैं – कहते हैं कि बात कर रहे हैं।"

ब्राइट ब्रदर्स वरकर : "प्लॉट 16-17 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 100 स्थाई मजदूरों की 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट हैं और चार ठेकेदारों के जरिये रखे 600 मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। नये वरकरों के 100-500 रुपये गड़बड़ी कर ठेकेदार हर महीने खा जाते हैं। जो ठेकेदार भाग गया उसके 300 मजदूरों को पी.एफ. के पैसे कम्पनी ने दिये ही नहीं। यहाँ **व्हर्लपूल** आदि का प्लास्टिक का कार्य होता है।"

मैटक सिस्टम मजदूर : "प्लॉट 517-18 सैक्टर-8 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में अगस्त 2011 में 6500 रुपये तनखा में ऑपरेटर भर्ती किया तब कहा था कि दिवाली पर तनखा बढा देंगे। दिवाली पर बोले कि अप्रैल में सब का वेतन बढायेंगे तब बढा देंगे। अप्रैल में तनखा नहीं बढाई और 16 मई को जब यह बोले कि किसी का वेतन नहीं बढेगा तब मैंने नौकरी छोड़ दी। मई की तनखा लेने 9 जून को फैक्ट्री गया। साहब ने गार्ड को कह दिया कि अन्दर मत आने दो और बोले कि काम क्यों छोड़ दिया, पैसे नहीं देंगे। फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 7½ बजे की शिफ्ट में रिफाइनरी ऑयल फिल्टर बनते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।"

आधुनिक ओवरसीज श्रमिक : "प्लॉट 17 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में कपड़े की रंगाई करते हैं। स्थाई मजदूर कोई नहीं है, ठेकेदार भी कोई नहीं है, सब मजदूर कैजुअल वरकर हैं। मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं और 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के हैल्पर को 6000 तथा ऑपरेटर को 7500 रुपये देते हैं। तनखा किस्तों में – कभी 500, कभी 1000 रुपये दे देते हैं। मार्च, अप्रैल, मई की तनखायें आज 27 जून तक नहीं दी हैं – हर मजदूर के 15 से 20 हजार रुपये बकाया हो गये हैं। पीने का पानी ठीक नहीं है, दूसरी फैक्ट्री से लाना पड़ता है।"

जे.एन.एस. कामगार : "प्लॉट 4 सैक्टर-3 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में कैन्टीन में रोटियाँ प्लास्टिक जैसी – चबाई ही नहीं जाती, पेट नहीं भरता। कैन्टीन के लिये तनखा से 26 दिन के 234 रुपये काटते हैं।"

इण्डिया फोर्ज वरकर : "प्लॉट 28 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 20-25 स्थाई मजदूर और पच्चीस- **(बाकी पेज चार पर)**

जरूरी है नई राहें तलाशना

* प्लॉट 195, 196, 205, 206 उद्योग विहार फेज-1, प्लॉट 292 फेज-2 और सैक्टर-37, गुड़गाँव स्थित **ईस्टर्न मेडिकिट** कम्पनी की फैक्ट्रियों को जस की तस छोड़ कर मैनेजमेन्ट 18 मई से "गायब" है। चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर करुण राज नारंग 18 मई से सम्पर्क नहीं कर रहा।

कम्पनी पर पंजाब नेशनल बैंक और यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया का 25-30 करोड़ रुपये कर्ज। प्रोविडेन्ट फण्ड के 2½ करोड़ रुपये बकाया, कच्चा माल देने वाली पार्टियों के पैसे बकाया, गुड़गाँव ग्रामीण बैंक के 60 लाख रुपये बकाया — कर्ज की अदायगी के लिये मजदूरों की तनखा से किस्तों के पैसे काटे पर ग्रामीण बैंक में जमा नहीं किये, बिजली बिल के 60-65 लाख रुपये बकाया, 2009 के तीन वर्षीय मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौते के अनुसार 1135 स्थाई मजदूरों के 35-36 लाख रुपये बकाया..... स्थाई मजदूरों की तनखा से जुलाई 2011 से काटे ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के पैसे भी जमा नहीं किये -- गबन। श्रम विभाग में 30 मई तक तारीखें दी, उसके बाद कोई तारीख नहीं — मैनेजिंग डायरेक्टर से सम्पर्क करने की कोशिशें श्रम विभाग कर रहा है पर सम्पर्क हो नहीं पा रहा। गुड़गाँव डी.सी. को 15 जून को ज्ञापन दिया। कहीं कोई सुनवाई नहीं। कोई माँग नहीं थी, कोई निलम्बित अथवा बर्खास्त नहीं था, कोई आन्दोलन नहीं था। यह सब बताते हुये ऑल ईस्टर्न मेडिकिट इम्पलाइज यूनियन के हताश नेताओं ने 21 जून को कहा कि लक्षण फैक्ट्रियाँ चलाने के नहीं हैं।

1988 में आजादपुर, दिल्ली में ईस्टर्न मेडिकिट किराये पर एक छोटे प्लॉट में आरम्भ हुई थी। सन् 2007 में ईस्टर्न मेडिकिट फैक्ट्रियों में 1100 स्थाई मजदूर और 3000 कैजुअल वरकर काम करते थे। सन् 2000 से यूनियन है : स्थाई मजदूरों की 8-8 घण्टे की शिफ्ट जबकि कैजुअल वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट; स्थाई मजदूर के लिये निर्धारित उत्पादन 500 पीस तो कैजुअल वरकर से 800-1100 पीस माँगना; स्थाई मजदूरों को तनखा 7 तारीख को जबकि कैजुअल वरकरों को 22-25 तारीख को; एक ही काम के लिये स्थाई तथा कैजुअल की तनखा में भारी भेद; कैजुअल वरकरों को ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से भी कम — यूनियन के अनुसार कानून मुताबिक दुगुनी दर से भुगतान करेंगे तो कम्पनी होड़ में टिक नहीं पायेगी और बन्द हो जायेगी। कैजुअल वरकरों की तनखा से ई.एस.आई. तथा पी.एफ. राशि काटी जाती पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं और बहुत मुश्किल से इक्का-दुक्का कैजुअल वरकर ही फण्ड के पैसे ले पाता था। ईस्टर्न मेडिकिट की उद्योग विहार स्थित फैक्ट्रियों में तीन हजार कैजुअल वरकरों ने 18 दिसम्बर 2007 को नवम्बर माह की तनखा के लिये रात की शिफ्ट में काम बन्द किया तब कम्पनी ने पुलिस बुला ली थी। कैजुअल वरकरों के विरोध और मैनेजमेन्ट द्वारा पुलिस बुलाना ईस्टर्न मेडिकिट की फैक्ट्रियों में एक रुटीन बन गया था। अक्टूबर 2011 से कम्पनी ने बड़ी सँख्या में कैजुअल वरकर निकालने आरम्भ किये। दिसम्बर में 1700 रह गये थे जिनमें से दिसम्बर में ही 900 कैजुअल वरकर और निकाले। और, स्थाई मजदूरों की तनखा देरी से देनी आरम्भ की...... 16 अप्रैल से स्थाई मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। बिल नहीं भरने पर दिसम्बर 2011 में प्लॉट 292 वाली फैक्ट्री की बिजली काट दी गई तब उत्पादन कार्य के लिये जनरेटर का सहारा लिया गया। बाकी प्लान्टों की बिजली 12 मई को काट दी गई तब इनमें 5 दिन जनरेटरों से काम..... 18 मई से मैनेजमेन्ट गायब हो गई।

चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर ने देहरादून में **ग्लोबल मेडिकिट** नाम से नई कम्पनी स्थापित की। वहाँ चार प्लान्ट, दो में कार्य आरम्भ। यहाँ से कम्पोनेन्ट देहरादून भेजने लगे। वर्ष-भर से मशीनें और डाई यहाँ से देहरादून ले जाने लगे। कई बार स्थाई मजदूरों ने मशीनें रोकने की कोशिश की तब यूनियन प्रतिनिधियों ने सस्पैण्ड करवाने की धमकी दे कर मशीनों को ले जाने में सहायता की। ऐसे में संगठन का मतलब क्या है ? यह शब्द ईस्टर्न मेडिकिट के स्थाई मजदूरों के हैं।

फैक्ट्रियों की दिन-रात चौकीदारी करते 1100 स्थाई मजदूरों को एक महीने से ऊपर हो गया। श्रम विभाग, डी.सी के बाद क्या ? यूनियन ने माल रोड़, दिल्ली स्थित कम्पनी के मुख्यालय पर धरने का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। मजदूर दिल्ली गये तो पुलिस ने कानून का हवाला दे कर दो घण्टे में हटा दिया। इधर उप श्रमायुक्त के यहाँ 5 जुलाई को भी वही ढाक के तीन पात। ऐसे में अन्य यूनियनों को बुलाना और नेताओं के भाषण करवाना जानते हुये टालमटोल के सिवा और कुछ है क्या ?

बिलकुल स्पष्ट है कि कम्पनी किसी की नहीं होती। यह भी पूरी तरह साफ है कि सरकार से मजदूर कोई आशा नहीं कर सकते। ईस्टर्न मेडिकिट मजदूरों के सम्मुख नई राह का प्रश्न कोई सैद्धान्तिक प्रश्न नहीं है बल्कि व्यवहार का सवाल बन कर तना खड़ा है। उद्योग विहार की हजारों फैक्ट्रियों में काम करते लाखों मजदूरों के पास जाने की आवश्यकता और समय, दोनों ईस्टर्न मेडिकिट मजदूरों के पास हैं। एक फैक्ट्री के मजदूरों के मामले को हजारों फैक्ट्रियों के मजदूरों का मामला बनाने के प्रयास नई राहों पर पहले कदम हैं।

*आई.एम.टी. मानेसर में प्लॉट 89 सैक्टर-8 स्थित **सीनियर फ्लैक्सोनिक्स** फैक्ट्री से 19 मई को पुलिस की सहायता से बाहर निकाले मजदूरों ने श्रम विभाग में 21, 24, 28, 30 मई की तारीखें भुगती। फिर 6 जून, 11 जून को श्रम विभाग में तारीख..... सीनियर फ्लैक्सोनिक्स के निकाले हुये मजदूरों ने श्रम विभाग कार्यालय पर ही धरना आरम्भ कर दिया। मैनेजमेन्ट ने 21 मई को ही ठेकेदारों के जरिये रखे पुराने मजदूरों को निकालने का नोटिस लगा दिया था। कई यूनियनों के प्रतिनिधि डी.सी. गुड़गाँव से मिले। प्रदर्शन। फैक्ट्री में जनवरी में भर्ती किये नये मजदूरों के जरिये उत्पादन जारी है। श्रम विभाग कार्यालय पर 2 जुलाई को भी 60 के करीब स्थाई मजदूर धरने पर बैठे थे। कम्पनी कहती है कि 15 स्थाई मजदूरों को छोड़ कर बाकी मजदूर ड्युटी पर आ जायें..... छह महीने के दौरान के सीनियर फ्लैक्सोनिक्स के मजदूरों के अपने अनुभवों ने भी क्या नई राहें तलाशने की आश्वयकता उजागर नहीं कर दी है ? श्रम विभाग कार्यालय पर धरने की बजाय आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्रियों के मजदूरों के पास जाना इन हालात में भी सीनियर फ्लैक्सोनिक्स मजदूरों के लिये राहत हासिल करने की राह लगती है।

नर्सों की हड़ताल

*वेतन वृद्धि और कार्य स्थितियों में सुधार के लिये फरीदाबाद स्थित **एशियन इन्सटीट्युट ऑफ मेडिकल साइन्सेज** की 330 नर्सों और **क्यू आर जी सेन्ट्रल अस्पताल** की 130 नर्सों ने 7 मई से हड़ताल आरम्भ की थी। हरियाणा के श्रम विभाग, प्रशासन, मुख्य मन्त्री ने चक्कर कटवा कर हड़ताली नर्सों को हताश किया। कई संगठनों का समर्थन और केरला के संसद सदस्यों के आश्वासन कुछ खास नहीं कर पा रहे थे। सेन्ट्रल अस्पताल की नर्सों पर पुलिस द्वारा गम्भीर धाराओं के तहत आरोपों ने ऐसे में आखिरी तिनके का काम किया और हड़ताल को एक महीना होने आया तब सेन्ट्रल अस्पताल की नर्सें दब कर वापस काम पर लौटी।

लेकिन 8 जून को प्रदर्शन के साथ एशियन अस्पताल की नर्सों ने हड़ताल जारी रखी। भारी गर्मी में स्त्री और पुरुष नर्स बड़कल पुल के पास खुले में धरने पर रहे। मैनेजमेन्ट की आशा के विपरीत नर्सें डटी रही। उपश्रमायुक्त, एस डी एम और मैनेजमेन्ट के साथ कई बार समझौता वार्तायें हुई — "पाँच को नहीं लेंगे" और "सब को ड्युटी पर लो" पर बात अटकी रही। राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी के नेतृत्व में नर्सों ने 20 जून को दिल्ली में केरला हाउस पर प्रदर्शन और मन्त्री शरद पवार को ज्ञापन तथा प्रधान मन्त्री को दूसरा ज्ञापन। उपश्रमायुक्त ने 27 जून को कहा कि वेतन वृद्धि नहीं होगी, नर्सों के विभाग बदलेंगे, पाँच को 15 दिन बाहर रखेंगे -- जाँच करेंगे और फिर सोचेंगे वाली तीन बातें मानोगे तो मैनेजमेन्ट समझौता वार्ता के लिये आयेगी।

उपश्रमायुक्त यानी एशियन अस्पताल मैनेजमेन्ट के सुझाव को नर्सों ने स्वीकार नहीं किया। वेतन वृद्धि नहीं तो हड़ताल के दौरान का वेतन देना, विभाग नहीं बदलना, पाँच को 15 दिन बाहर रख कर ड्युटी पर ले लेना वाले नर्सों के प्रस्ताव को उपश्रमायुक्त यानी मैनेजमेन्ट ने नहीं माना।

केरला के मुख्य मन्त्री (बाकी पेज चार पर)

बोर्ड से निगम

केन्द्र सरकार द्वारा कानून बनाने के बाद हरियाणा सरकार ने कानून बना कर 14 अगस्त 1998 को **हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड** को भंग कर चार निगम बनाये – हरियाणा पावर जनरेशन कॉरपोरेशन लिमिटेड, हरियाणा विद्युत प्रसारण निगम, उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम, दक्षिण हरियाणा बिजली वितरण निगम।

निगम बनते ही बिजली उत्पादन-प्रसारण-वितरण क्षेत्र में ठेकेदारों का थोक में प्रवेश हुआ। हर कार्य ठेकेदारों के जरिये करवाना आरम्भ हुआ। आज नब्बे प्रतिशत कार्य ठेकेदारों के जरिये करवाया जाता है। नियमित, स्थाई कार्य के लिये अनियमित, अस्थाई कामगारों का बोलबाला है। ठेकेदार बदलते रहते हैं, वरकर वही रहते हैं।

निगमों के लिये भी नियमों, कानूनों की कोई कमी नहीं है। हाँ, कानूनों का उल्लंघन सामान्य बात है और कानूनों का पालन अपवाद है।

निर्माण कार्य के कुछ मजदूरों को छोड़ कर बाकी सब वरकर आई.टी.आई., डिप्लोमा, प्रमाणपत्रों वाले हैं। और, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर बनने तथा बने रहने के लिये भी प्रशिक्षित युवाओं को विधायक, सांसद, मन्त्री आदि से सिफारिशें करवानी पड़ती हैं।

दक्षिण हरियाणा बिजली वितरण निगम में फरीदाबाद में एक ठेकेदार निगम से अपना हिसाब साफ कर चला गया – मजदूरों को तीन महीनों का वेतन दिये बिना ठेकेदार चला गया...

हरियाणा विद्युत प्रसाण निगम में गुड़गाँव में पहली अप्रैल से नया ठेकेदार आया है और नये बैंक खाते खोलने की बात के संग वेतन में देरी लाया है। इससे पहले वाला ठेकेदार पाँच वर्ष रहा और मजदूरों के ई.पी.एफ. के पैसे जमा नहीं किये। उससे पहले वाले ठेकेदार ने भी मजदूरों की प्रोविडेन्ट फण्ड की राशि जमा नहीं की थी। पे-स्लिप नहीं देते, पी.एफ. नम्बर नहीं बताते। **जो लोग नौकरी छोड़ गये हैं उन्हें दो वर्ष बाद भी फण्ड के पैसे नहीं मिले हैं।**

टाइपिस्ट – ठेकेदार के जरिये। बिलिंग, रीडिंग, बिल बाँटने वाले ठेकेदार के जरिये। ड्राइवर, कम्प्युटर ऑपरेटर, ऑडिटर ठेकेदार के जरिये। विद्युत सब-स्टेशन पर एक जे ई, एक स्थाई मजदूर और ठेकेदार के जरिये रखे 7 वरकर।

उपरोक्त के दृष्टिगत केन्द्र सरकार से, हरियाणा सरकार से क्या मजदूरों को कोई आशा करनी चाहिये? सोचने-विचारने की बात है। और अधिक महत्वपूर्ण है : क्या-क्या करें तथा क्या-क्या नहीं करें।

महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें। अन्यथा भी, चर्चाओं के लिए समय निकालें।

सुरक्षाकर्मी

सत्या सिनेमा के पीछे, सैक्टर-7, फरीदाबाद में कार्यालय वाली **एच आई एस एस** कम्पनियों को गार्ड और मजदूर सप्लाई करती है। पृथला गाँव, जिला पलवल में मथुरा रोड़ पर स्थित **ऑटो लेक** फैक्ट्री पर एच आई एस एस के गार्ड महीने के तीसों दिन 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करते हैं। फैक्ट्री 8-10 एकड़ में है। रात 8 से अगली सुबह 8 बजे वाली शिफ्ट में 2 गनमैन, 4 गार्ड और एक सुपरवाइज़र ड्युटी पर रहते हैं। फैक्ट्री में मजदूरों की सुबह 8½ से रात 8½ की एक शिफ्ट है। रात 8 बज कर 50-55 मिनट पर ऑटो लेक अधिकारी फैक्ट्री सील कर देते हैं। सुबह 7½ बजे ऑटो लेक सेक्युरिटी अफसर सील जाँचता है और ठीक पा कर रजिस्टर में हस्ताक्षर कर सील खोलता है। फैक्ट्री में 70 कैमरे भी लगे हैं।

9 फरवरी को सुबह 7½ बजे जाँच में सही पाये जाने के बाद सीलें खोली गई थी। रात 7½ बजे 9 फरवरी को गार्ड ड्युटी पर पहुँचे तब उन्हें जनवरी की तनखा दी गई। फिर ऑटो लेक का एक मैनेजर बोला कि चोरी हुई है और एच आई एस एस के डायरेक्टर फैक्ट्री पहुँचे। जाँच के बाद सुबह सील खोली गई थी, कोई खिड़की नहीं खुली थी, दीवार कहीं नहीं टूटी थी, 70 कैमरे लगे ही थे। फिर भी एक गनमैन और दो गार्डों को गदपुरी पुलिस चौकी ले गये। ले जाते समय एच आई एस एस डायरेक्टरों ने उनकी तनखा और मोबाइल फोन ले लिये। रात-भर पुलिस चौकी में रखा और सुबह सी आई ए पुलिस पलवल को सौंप दिया। पिटाई। "नहीं मालूम – सुपरवाइजर से पूछो।" गनमैन और दोनों गार्ड 8 दिन सी आई ए की हिरासत में रहे। पत्नियों की कुण्डल-पाजेब बेची, गृहस्थी का सामान बेचा, गाँव से पैसे मँगवाये..... तब छूटे। तनखा के पैसे और मोबाइल फोन लेने एच आई एस एस कार्यालय गये। नहीं लौटाये। गाली देते हैं और कहते हैं कि पाँच लाख रुपये के ताम्बे की चोरी करवा दी।

नर्सों की हड़ताल (पेज तीन का शेष)

के समक्ष वार्ता में 3 जुलाई को समझौते की घोषणा। पाँच को 15 दिन सस्पैण्ड रखने के बाद ड्युटी पर लेंगे..... नर्सें ड्युटी के लिये पहुँची तो सब उल्टा हो गया। सब को नहीं ले सकते, नये भर्ती किये हैं। इधर-उधर काम करो। सब नर्सों ने इनकार कर दिया। केरला के मुख्य मन्त्री को फोन किया, उनका पी.ए. आया। समझौता : 80% की 6 दिन क्लास चलेगी फिर उन्हें जहाँ काम करते थे वहाँ ले लेंगे, बाकी 20% को लेने में 40-45 दिन लगेंगे.........नर्सों के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर कर दिये, एशियन अस्पताल का मैनेजिंग डायरेक्टर चला गया था इसलिये मैनेजमेन्ट ने समझौते पर हस्ताक्षर नहीं किये! हड़ताल से लौटी नर्सों को हॉल में बैठा डाक्युमेन्ट्री फिल्म दिखा रहे हैं......

निमन्त्रण

आज ऐसे तौर-तरीकों की आवश्यकता है जो सात अरब लोगों की सक्रिय साझेदारी में योगदान दे सकें। इस सिलसिले में एक कदम के तौर पर हम बातचीतों के लिये यह निमन्त्रण दे रहे हैं। प्रत्येक माह के अन्तिम रविवार को मिलने का हम प्रयास करेंगे। जुलाई में 29 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुये रास्ता है, पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी है।

29 जुलाई को सुबह 9 से 11 बजे के दौरान गुडईयर टायर फैक्ट्री के अपने अनुभवों को वहाँ काम कर चुका एक मजदूर प्रस्तुत करेगा।

हकलाना-काब्बा बोलना कोई झिझक की बात नहीं है। टुकड़ों में ही बातों के बारे में बेफिकर रहिये। तारतम्य का अभाव, छूटी कड़ी-लड़ी-डँका बातचीतों में बाधक नहीं होंगे। टेढेपन, गतिशील टेढेपन से पार पाने के लिये सात अरब लोगों के बीच बातचीतों को बहुत बढाने की आश्यकता है।

क्या करें और क्या नहीं करें, कैसे करें और कैसे नहीं करें हमारे लिये महत्वपूर्ण हैं। इस सन्दर्भ में प्रत्येक के अनुभव व विचारों का स्वागत है। एक अनुरोध : कृपया वाकयुद्ध से बचने की कोशिश कीजिये; चर्चाओं को-बहस को समेटने-समाप्त करने के प्रयास मत कीजिये; आदरपूर्ण और आनन्दपूर्ण बातचीत की कोशिश करें। यह बातचीतें मुख्यतः व्यवहार, बेहतर व्यवहार के लिये हैं।

फैक्ट्रियों में... (पेज दो का शेष)

तीस ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूर **मारुति सुजुकी** के एक्सल तथा अन्य हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, बोनस नहीं और तनखा 4000-4500-5000 रुपये। तनखा हर महीने देरी से – मई की आज 27 जून तक नहीं दी है। मेन्टेनैन्स के लिये 23 जून से मारुति सुजुकी में **उत्पादन बन्द है और ऐसी ही स्थिति यहाँ इण्डिया फोर्ज में है।** मकान मालिक के किराये के तकाजे से बचने के लिये सुबह-सुबह कमरे से निकल लिया हूँ।"

ओरियन्ट क्राफ्ट श्रमिक : "प्लॉट 15 सैक्टर-5 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में जून-आरम्भ से काम कम है, कभी इस लाइन में तो कभी उस लाइन में एक-दो दिन का ब्रेक दे रहे हैं। फैक्ट्री में अब मजदूर भी कम हैं, 1000 के करीब हैं। पे-स्लिप में हरियाणा वेलफेयर के 5 की जगह अब 15 रुपये काटने लगे हैं..... साइकिलें नहीं दी हैं।"

यूनिमैक्स लैबोरेट्री वरकर : "प्लॉट 7 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 35 मजदूरों की तनखा 4000-4500 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में आर ओ सिस्टम है पर यह साफ पानी दवाइयों के लिये है, मजदूरों के लिये नहीं। मजदूर टंकी का पानी पीते हैं। रसायनों से मजदूर बीमार पड़ते हैं।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट **RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14**
दिल्ली से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।